M.A - SEMESTER III Paper. CC-8 I

इकाई-I अर्धमागधी आगम साहित्य
आचारांग के नौ अध्ययन

Q. आचारांग नियुक्ति में आचारांग के नौ अध्ययनों का सार संक्षेप में विवेचन करें।

Ans- आचारांग नियुक्ति में आचारांग के प्रथम श्रुत-स्कंध के नौ अध्ययनों का सार संक्षेप में विवरण इस प्रकार है।

(I) जीव समय जीवों के अस्तित्व का प्रतिपादन और उसकी हिंसा का परित्याग।

(II) किन कार्यों के करने से जीव कर्मों से आबद्ध होते हैं और किस प्रकार की साधना करने से जीव कर्मों से मुक्त होता है।

(III) श्रमण को अनुकूल और प्रतिकूल उपसर्ग समुपस्थित होने पर सदा समभाव में रहकर उन उपसर्गों को सहन करना चाहिए।

(IV) दूसरे साधकों के पास अणिमा, गरिमा, लघिमा आदि लब्धियों के द्वारा प्राप्त ऐश्वर्य को निहार कर साधक सम्यकत्व से विचलित न हो।

(V) इस विराट विश्व में जितनी भी पदार्थ है वे निस्सार है, केवल सम्यकत्व रत्न ही सार रूप है।

(VI) सद्गुणों को प्राप्त करने के पश्चात श्रमण को किसी भी पदार्थ में आसक्त बनकर नहीं रहना चाहिए।

P.T.O

(VII) संयम साधना करते समय यदि मोहजन्य उपसर्ग उपस्थित हों तो उसे सम्यक् प्रकार से सहन करना चाहिए पर साधना से विचलित नहीं होना चाहिए।

(VIII) सम्पूर्ण कर्मों से मुक्त अन्त क्रिया के सम्यक् प्रकार से आराधना करनी चाहिए।

(IX) जो उत्कृष्ट संयम साधना, तप आराधना, भगवान महावीर ने की उसका प्रतिपादन किया गया

आचारांग के प्रथम श्रुतस्कन्ध में नौ अध्ययन, चार चूलिकाओं से युक्त द्वितीय है। इस प्रकार आचारांग के प्रथम सूत्र का विवेचन किया गया है।